VOL- X | ISSUE- VI | JUNE | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन

कैलाश
(शोधकर्त्री)

डॉ. गुंजन शर्मा
(शोध निर्देषिका)

मनुष्य के शैक्षणिक विकास में उसकी बुद्धि, मानसिक योग्यताओं, कल्पना, चिंतन, भावना और संकल्पना इत्यादि मानसिक प्रक्रियाओं का विकास सम्मिलित है। एक सुसमायोजित व्यक्ति का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होता है और वह वांछनीय सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों से सम्पन्न होता है। उसका मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छाहोता है। प्रसन्न रहने वाले, आशावादी तथा संतुलित व्यक्तित्व रखने वाले व्यक्तियों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा समझा जाता है। जब व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं तथा वातावरण के उन कारकों जिनसे उन इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की सही ढंग से संतुष्टि होती है, के बीच एक संतुलन बनाए रखता है तब हम इस प्रक्रिया को समायोजन की संज्ञा देते है। परन्तु जब किन्हीं कारणों से यह संतुलन बिगड़ जाता है तब इस अवस्था को कुसमायोजन की स्थिति कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि यदि छात्र या शिक्षक में कुसमायोजन की स्थिति लंबे अरसे तक बनी रहती है तो इससे उनके व्यक्तित्व में असामान्यता बढ़ जाती है।

समायोजन-

जिस प्रकार अधिगम की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती है, उसी प्रकार समायोजन की प्रक्रिया भी जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती है। समायोजन, तालमेल, तथा अनुकूलन को एक अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। जन्म लेते ही बालक को अपने भौतिक वातावरण के साथ अनुकूलन करना पड़ता है। जीवन के अस्तित्व को बनाऐ रखने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक भी है। व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का अपनी योग्तयाओं और वातावरण के सन्दर्भ में सामना करना होता है। कभी समझौता करना होता है, तो कभी उनके साथ समन्वय बैठाना होता है। इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया व उपलब्धि को समायोजन कहा जाता है। किसी भी मनुष्य का विभिन्न परिस्थितियों के बीच समायोजन कर लेना व्यक्तित्व का प्रमुख लक्षण है। क्रिया और व्यवहार में परिवर्तन का प्रत्येक परिस्थिति में अपने आपको ढाल लेने की क्षमता अच्छे व्यक्तित्व की परिचायक है। समायोजनषीलता के कारण ही व्यक्ति बहुत से आन्तरिक द्वन्दों से मुक्ति पा लेने में सफल हो जाता है विभिन्न परिस्थितियों में अपनी बुद्धि का प्रयोग सफलतापूर्वक करके वास्तविकता को समझते हुये उसी के अनुरूप व्यवहार व आचरण करना एक सन्तुलित व्यक्तित्व का लक्षण हैं। ऐसा ही व्यक्ति अपने पर्यावरण के साथ समायोजन कर सुख का अनुभव कर पाता है। अतः समायोजन को व्यक्तित्व की पहली और बहुत महत्वपूर्ण विषेषता कहना चाहिए। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य बालक को सामाजिक बनाने पर बल देता है तथा समाज में समायोजन बालक कैसे करेगा इस बात पर भी बल देता है।

समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। समायोजन के द्वारा ही व्यक्ति अपनी समस्याओं को सुलझाता रहता है। व्यक्ति यदि इन समस्याओं को सुलझाने में सफल होता है तो उसकी समायोजन क्षमता अच्छी मानी कहलाती है और यदि वे असफल होते हैं तो उनकी समायोजन क्षमता अच्छी नहीं मानी जाती है।

न्यादर्श-

प्रस्तुत शोध कार्य के दत्त संकलन कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा राजस्थान राज्य के अजमेर जिले के राजकीय महाविद्यालयो के २०० विद्यार्थियों एवं निजी महाविद्यालयों के २०० **(कुल ४००)** विद्यार्थियों का चयन किया गया।

विधि–

इस शोध अध्ययन में शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

उपकरण–

इस हेतु शोधकर्त्री द्वारा मानकीकृत उपकरण के रूप में **समायोजन हेतु आर. के. ओझा द्वारा निर्मित बेल समायोजन अनुसूची** (BAI) का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी–

शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया।

शोध के उद्देश्य–

१. राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

विश्लेषण–

सारणी संख्या–१

समूह (समायोजन)	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
राजकीय महाविद्यालय विद्यार्थी	२००	५०.९१	२२.४९	३९८	०.३३	सार्थक अन्तर नहीं है।
निजी महाविद्यालय विद्यार्थी	२००	५१.५८	१८.४९			

०.०१ व ०.०५ सार्थकता स्तर

परिणाम एवं व्याख्या–

सारणी संख्या १ के अनुसार राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान क्रमश : ५०.९१ तथा ५१.५८ है। इन दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमषः २२.४९ व १८.४९ हैं। अतः दोनों के मध्यमानों के अंतर का टी मूल्य ०.३३ है। ये मूल्य ३९८ स्वतंत्रता की कोटि हेतु ०.०५ स्तर पर विष्वास मूल्य १.९६ तथा ०.०१ के विष्वास मूल्य २.५८ से कम है। अतः दोनों स्तरों पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः परिकल्पना **'राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'** को पूर्णतः स्वीकृत किया जाता है।

दोनों महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन मे कोई अंतर प्राप्त नहीं हुआ है जैसा कि लेखाचित्र से भी स्पष्ट हो रहा है–

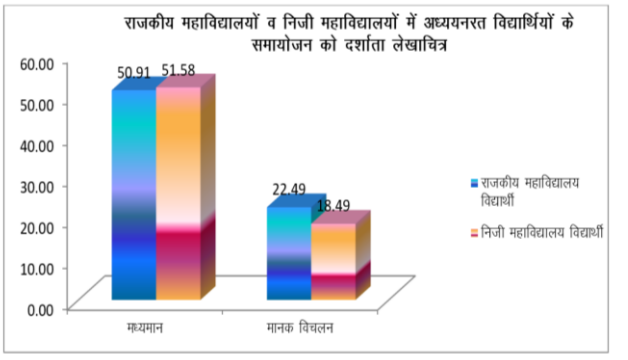

सारांष–

अध्ययन के परिणाम से राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रकाश डालने में मदद मिलेगी। यह शोध राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला व पुरूष विद्यार्थियों तथा गामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियो के समायोजन का अध्ययन करने में भी मदद करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- **अरोड़ा डॉ. रीता, मारवाह डॉ. सुदेष (२००४-०५)–** शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार, जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।

2- **शर्मा, डॉ. आर. ए (२०१३)–** शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

3- **राय, पारसनाथ**– 'शैक्षिक प्रशासन एवं विद्यालय संगठन' (लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा)

4- **डॉ. शर्मा, आर.ए.**– 'शिक्षा अनुसंधान' (आर.लाल बुक डिपों, मेरठ ९२-९३)

5- **अग्रवाल, जे.सी. (१९६६),** *एज्यूकेशनल रिसर्च इन इन्ट्रोडक्शन.* नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।

6- **गौड, अनिता (२००५),** बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे. नई दिल्लीः राज पाकेटबुक्स. पृष्ठ संख्या-१४.

7- **ढोढियाल, एस. पाठक (१९९०),** शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या-५१.

8- **पाठक, पी.डी. (२००७),** शिक्षा मनोविज्ञान. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर. पृ.सं.२४५, ५५२,४५०.

9- **मित्तल, एम. एन. (२००५),** शिक्षा के समाजषास्त्रीय आधार. मेरठः इन्टरनेशलपब्लिशिंग हाऊस. पृ. स.- २९३-२९६.

10- **मेहता, वी. आर. (२००६),** उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा . कोटा बीई.प्रथम कोटा खुला विश्वविद्यालय. पृष्ठ संख्या-७१.

11- **मेहता, वी. आर.(२००६),** अध्ययन पाठ्यक्रम अभिकल्प समितिः मूल्यपरक शिक्षाकोटाःकोटा खुला विश्वविद्यालय. पृष्ठ संख्या-७०.

12- **राय, पी.एन.(१९८१),** अनुसंधान परिचय. चतुर्थ संस्करण. आगराः विनोद पुस्तकमंदिर पृष्ठ संख्या-६३.

13- **श्रीवास्तव, डी.एन. और वर्मा, प्रीति (२००७),** बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकासआगराःविनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या-४५९-४६०.

14- **पारीक, प्रो. मथुरेश्वर (२००५),** उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा.जयपुरः शिक्षाप्रकाशन. पेज २२.

15- **भार्गव, ऊषा (१९९३),** किशोर मनोविज्ञान. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थअकादमी. पृष्ठ संख्या-९९.

16- **रेणा, विनोद (२००८),** सार्वभौम षिक्षा की दिषा में उठे कदम. नई दिल्लीः मासू.प्र.मं. वर्ष-५२, अंक-११, पृ.सं.७.

17- **वादवानि, पुष्पा (२००३),** सुखद भविष्य की ओर पारिवारिक जीवन शिक्षा,राजस्थानः आई.ई. सी. ब्यूरो स्वास्थ्य विभाग. पृष्ठ संख्या-३३.

18- **शर्मा, रामनाथ (१९७८),** नीतिशास्त्र की रूपरेखा. मेरठ केदारनाथ.रामनाथप्रकाशन. पेज -१२०.

19- **सचदेव, डी. आर. व विद्याभूषण (२००४),** समाजशास्त्र के सिद्धान्त. नई दिल्लीः किताब महल पृ. स.- ३०७.

20- **सारस्वत, डॉ. मालती (१९९७),** शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखाः आदत और शिक्षा,आगराः विनोद पुस्तक मंदिर. पृ. स. २५५.

21- **सुखिया, एस.पी. (१९७३),** शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. द्वितीय संस्करण, आगराःविनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या-४८७.

22- **हकीम, एम.ए. और अस्थाना, विपिन (१९९४),** मनोविज्ञान की शोध विधियाँ.आगराः विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या-१६९.

23- **यादव, एम.आर.** अनुसंधान परिचय. आगराः विनोद पुस्तक मंदिर. पृ.सं. ७४.

24- **व्यास, हरिषचन्द्र. (२००१),** हम और हमारी शिक्षा, जयपुरः पंचशील प्रकाशन चौड़ारास्ता. पृ. सं. १७.

25- **त्रिवेदी, आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (२००८),** रिसर्च मैथडोलॉजी, जयपुरः कॉलेज बुक डिपो. पृ. सं. ३२१.

Journals and Magazines-

१. भारतीय शिक्षा शोध, पत्रिका रिव्यू, अंक-२२.

२. नई शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक संवाद की पत्रिका, वर्ष - ६२ अंक - ५.

३. जर्नल ऑफ वैल्यू एजूकेशन, अंक-५, जनवरी व जुलाई, २००५.

Survey-

1.Buch, M.B. (Ed.). First survey in Education.

2.Buch, M.B. (Ed.). Second survey in Education.

3.Buch, M.B. (Ed.). Third survey in Education.

4.Buch, M.B. (Ed.). Fourth survey in Education.

5. Buch, M.B. (Ed.). Fifth survey in Education

Webliography-

1. www.ase.org.uk
2. www.shodhganga.inflibnet.ac.in
3. www.usq.edu.au/users/albino/papers/site99/1345.html
4. www.skills_nict.com.in
5. www.google.com
6. www.education.nic.in